Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 18, Issue No. 4, July-2021, ISSN 2230-7540

दलित साहित्य के इतिहास पर एक अध्ययन

Gargi Prajapati[1]*, Dr. Rajesh Kumar Niranjan[2]

[1] Research Scholar, Shri Krishna University, Chhatarpur M.P.

[2] Associate Professor, Shri Krishna University, Chhatarpur M.P.

सार - दलित साहित्य दलितों द्वारा उनके जीवन के बारे में लिखा गया साहित्य है। दलित साहित्य 1960 के दशक में मराठी भाषा में उभरा, और यह जल्द ही बांग्ला, हिंदी, कन्नड़, पंजाबी, सिंधी और तमिल भाषाओं में कविताओं, लघु कथाओं जैसे आख्यानों के माध्यम से प्रकट हुआ। और आत्मकथाएँ, जो वास्तविकता और दलित राजनीतिक परिदृश्य के उनके स्पष्ट चित्रण के कारण बाहर खड़ी थीं। दलित साहित्य ने मुख्यधारा के मराठी साहित्य द्वारा जीवन के तत्कालीन प्रचलित चित्रण की निंदा की।

कीवर्ड - दलित, दलित साहित्य, इतिहास

----------X----------

परिचय

स्वाभाविक रूप से प्राचीन काल से ही समाज में दो वर्ग हैं। वे हैं: उत्पीड़क और उत्पीड़ित, शासक और शासित, शोषक और शोषित। शोषक का वर्ग हमेशा शक्तिशाली और प्रभावशाली होता है। दूसरी ओर, शोषित वर्ग अल्प, असहाय और मानवाधिकारों द्वारा उपेक्षित है। समाजशास्त्रीय दृष्टि से उपेक्षित वर्ग किसी जाति या समुदाय का नहीं है जिसकी उपेक्षा की जाती है, वह दलित है।

दलित साहित्य की अवधारणा

दलित साहित्य क्या है? क्या यह दलितों द्वारा अपने जीवन पर लिखा गया साहित्य है या इसमें दलितों पर गैर दलितों द्वारा लिखा गया साहित्य शामिल है? प्रश्न बहुत व्यापक चर्चा की ओर ले जाते हैं। लेकिन इन दोनों प्रकारों के बीच एक सीमा रेखा खींचना बहुत कठिन है। लेकिन सामान्यतया: दलित साहित्य दलित जीवन पर दलितों के लेखन को संदर्भित करता है। दलित साहित्य वह लेखन है जो दलितों के जीवन के बारे में लिखा गया है। यह दलित चेतना द्वारा निर्मित किया गया था। इसके पीछे मानव स्वतंत्रता प्रेरणा है।

दलित दृष्टिकोण और दलित बिंदु

दलित साहित्य दलित दृष्टिकोण से और दलित दृष्टि से लिखा जाना चाहिए। दलित दृष्टिकोण दलितों के दुख और पीड़ा की व्याख्या है। कुछ दलित संवेदनशीलता वाले किसी भी लेखक के पास दलित दृष्टिकोण हो सकता है लेकिन जरूरी नहीं कि वह दलित दृष्टि ही हो।

दलित दृष्टिकोण और दलित दृष्टि के बीच का अंतर वांछित उद्देश्य में पाया जा सकता है। दलित दृष्टिकोण वाला व्यक्ति सीमित परिवर्तन का लक्ष्य रखता है जबकि दलित दृष्टि वाला व्यक्ति परिवर्तन की संपूर्ण क्रांति की मांग करता है। इस बारे में प्रो. एस.जेड.एच. आबेदी ने दलित साहित्य पर राष्ट्रीय सम्मेलन में अपने मुख्य भाषण में दलित और गैर-दलितों पर प्रकाश डाला। उनका तर्क है:

दलित और गैर-दलित दोनों द्वारा लिखित दलित साहित्य क्रोध और पीड़ा की कविताओं और विरोध के सौंदर्यशास्त्र पर आधारित है। चूंकि यह जीवन के लिए कला के सिद्धांतों पर आधारित है, इसलिए यह नारीवादी साहित्य जैसी कला या तकनीक की तुलना में विषय की ओर अधिक उन्मुख है। उच्च समाज, उच्च साहित्य और उच्च सिद्धांत के विनम्र विवेक पर निर्देशित जीवंत वास्तविकता और स्पष्ट अभिव्यक्ति द्वारा दलित साहित्य में कला

www.ignited.in

और कलात्मकता की कमी की भरपाई की जाती है। [अबेदी]

हालांकि, दलित साहित्य का उद्देश्य मानवीय संवेदनशीलता को व्यक्त करना है और इसलिए दलित उन्मुख साहित्यिक ग्रंथ कलात्मक सिद्धांतों के सौंदर्यशास्त्र के खिलाफ मानव भव्यता के सौंदर्यशास्त्र के पुनर्निर्माण के लिए उपकरण हैं।

दलित सौंदर्यवाद

स्वतंत्रता, समानता, न्याय और मानवीय करुणा की लालसा के साथ-साथ लगातार पीड़ा को प्रतिध्वनित करने वाले अंधेरे के क्षेत्रों को उजागर करने के लिए दलित लेखक रोमांटिक कल्पना की दुनिया से बचते हैं। वे एक नए सौंदर्यशास्त्र की तलाश में हैं जिसे धर्म, मिथकों, नैतिक प्रतिबद्धताओं और कलात्मक सिद्धांतों की गतिशीलता से परे वास्तविक मानव पीड़ा की सांस के रूप में स्वीकार किया जा सकता है। संजय कुमार टिप्पणी:

दलित साहित्य में सौंदर्यवाद को एक व्यक्तिगत घटना के रूप में माना जा सकता है जो सार्वभौमिक आनंद सुनिश्चित नहीं कर सकता है क्योंकि जो खुद को दलित अनुभव से पहचानता है वह स्पष्ट रूप से दूसरों की तुलना में अधिक आनंदित होगा। इसके अलावा, यह निश्चित रूप से उन पाठकों को प्रसन्न करता है जिनके पास इतिहास की अच्छी समझ है और समाज के प्रति संवेदनशीलता है। जिसने दलित अनुभवों को जिया है, वह और कोई अर्थ नहीं सोच सकता

दलित आत्मकथाओं के माध्यम से चित्रित सौंदर्यवाद की तुलना में दलित सौंदर्यशास्त्र और प्रतिरोध, दावे और विरोध के एक स्वर के साथ चिह्नित।'

इस प्रकार, दलित सौंदर्यवाद दलित चेतना की तरह मन की स्थिति है।

दलित और गैर-दलित लेखन

अनुभव की शक्ति देने में गैर दलित लेखकों और दलित लेखकों में बहुत अंतर है। गैर-दलित लेखकों ने वैचारिक अनुभव के रूप में लिखा है, जबकि दलित लेखकों को संवेदनशील अनुभव के रूप में लिखा गया है। स्टेज पर प्ले रीडिंग और प्ले व्यूइंग में भी अंतर होता है। दलित लेखन में अनुभव की अभिव्यक्ति का विशेष उल्लेख मिलता है। गैर-दलित लेखन वास्तविक नहीं है, बल्कि एक काल्पनिक कृति है। कोई स्वतःस्फूर्त अनुभूति नहीं होती है। इसलिए दलित जीवन की प्रामाणिकता दलित लेखन में देखी जा सकती है। दलितों और दलितों पर गैर-दलितों के लेखन को नरेंद्र जाधव ने इस प्रकार अलग किया है, 'अंतर यह है कि एक माँ के प्यार और एक नर्स के प्यार के बीच'। [जाधव: 2003] दलित लेखकों ने तर्क दिया कि दलितों द्वारा झेले गए अनुभवों और अपमान की गैर-दलित लेखकों द्वारा कल्पना या व्याख्या नहीं की जा सकती है। इस प्रकार, दलितों पर गैर-दलितों के लेखन में थोड़ा अंतर पाया जा सकता है। इस चर्चा में दलित और गैर-दलित दोनों समुदायों के कई लेखकों ने भाग लिया। दलित जीवन के बारे में लिखने वाले गैर-दलितों की पहचान केवल विरोध लेखकों के रूप में की गई। क्योंकि वे छुआछूत के शिकार नहीं थे। हालांकि, उन्होंने समाज के अन्याय के खिलाफ अपना गुस्सा व्यक्त किया। उनके विचार आर्थिक असमानता से अधिक चिंतित थे। लेकिन दलित लेखकों की प्रमुख चिंता सामाजिक अन्याय थी। इसलिए ये दलित लेखक अपने ही लेखन को दलित साहित्य मानते थे।

दलित साहित्य का उद्देश्य

दलित साहित्य का मुख्य उद्देश्य भारत के उत्पीड़ित वर्ग को आवाज देना है। यह दलित ब्रह्मांड और शोषित दुनिया की स्वतंत्रता और न्याय का चार्टर है। यह सत्ताधारी वर्ग के लिए नास्तिकता, कर्म के नियम, मंदिरवाद और अन्य सभी मूल्य प्रणालियों को जलाने का घोषणापत्र है जो आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आदि सभी स्तरों पर दलितता को जन्म देता है और पोषण करता है। लेखन या जीवन रेखाचित्र जिसके माध्यम से यह चेतना झांकती है दलित साहित्य कहा जा सकता है। जो साहित्य पूर्ण सुधार को व्यक्त करता है और क्रांति का सामना करने के लिए तैयार है, उसे दलित साहित्य कहा जाता है। दलितों की समस्या का अर्थ है मानव स्वतंत्रता की समस्या। हम मानव स्वतंत्रता की अवधारणा को तब तक नहीं समझ सकते जब तक हम दलितों की समस्याओं को नहीं समझते। साहित्य के मूल में पड़ा यह व्यापक दृष्टिकोण न केवल उस साहित्य को दलित का साहित्य बनाता है बल्कि मनुष्य का साहित्य भी बनाता है।

दलित साहित्य के क्षेत्र की प्रकृति

दलित साहित्य भारत में विशिष्ट सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक स्थितियों की उपज है। दलित साहित्य शब्द 1958 में प्रयोग में आया, जब पहला दलित साहित्य सम्मेलन 8 मार्च, 1958 को मुंबई में आयोजित किया गया था। इसके संबंध में, एड। एकनाथ अवध ने कहा,

www.ignited.in

जीवननाथ घेटेला परिवर्तननच वर्सा..., इस साहित्य सम्मेलन के उद्घाटन समारोह में साहित्यरत्न अन्नभाऊ साठे ने कहा:

दलित साहित्य नवजीवन का संघर्ष है। यह मानवता की आत्मा है। यह एक जीवन कहानी है जिसने मृत्यु की स्थिति का सामना किया। इसलिए अन्नाभाऊ सथे कहते हैं, 'यह ब्रह्मांड नाग के सिर पर खड़ा नहीं है, बल्कि दलितों, किसानों और उत्पीड़ित लोगों के हाथों पर निर्भर है।' [अवाद: 2013]

दलित साहित्य आत्म-अभिव्यक्ति, आत्म-अस्तित्व या आत्म-पहचान का माध्यम है। यह उन समुदायों के अनुभवों की अभिव्यक्ति का मंच और माध्यम है जो भारतीय जाति-ग्रस्त हिंदू समाज में सदियों से बहिष्कृत, हाशिए पर, शोषित और अपमानित हुए हैं। यह दलित अनुभव और संवेदनशीलता को दर्शाता है, मुख्य रूप से दलित दृष्टिकोण से दलित पहचान को परिभाषित करने और मुखर करने का प्रयास करता है। कई मायनों में, यह एक विरोध साहित्य है जो ईमानदारी से दलित स्थिति की कठोर वास्तविकताओं को प्रतिबिंबित करता है और दलित (राजनीतिक) आंदोलन को मजबूत करने के लिए एक महत्वपूर्ण हथियार बन जाता है। दलित लेखक शरणकुमार लिंबाले इसे कहते हैं: 'हजारों वर्षों के अन्याय के खिलाफ अछूतों की ज्वलनशील चीख।' [लिम्बाले: 2003] इस प्रकार, दलित साहित्य की जड़ें उन लोगों के जीवन में हैं जो दबे, कुचले, दलित या दलित हैं।

दलित साहित्य अब साहित्य की एक स्थापित विधा है। दलित साहित्य का प्राथमिक उद्देश्य भारत में दलितों की मुक्ति है। दलित साहित्य के उद्देश्य के बारे में डॉ. सी.बी. भारती ने कहा: 'दली साहित्य का उद्देश्य स्थापित व्यवस्था के खिलाफ विरोध है जो अन्याय पर आधारित है और उच्च जाति की बुराई और पाखंड को उजागर करता है।' [भारती: 1999] दूसरे शब्दों में, सुरेखा डंगवाल ने कहा: 'दलित साहित्य अनुभाव-अनुभव- पर आधारित है न कि अनुमान-अटकलबाजी।' [अरोड़ा: 2010] इसलिए, प्रामाणिकता और जीवंतता दलित साहित्य की आवश्यक विशेषता है। इस प्रकार, दलित साहित्य को एक साहित्यिक आंदोलन के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसका उद्देश्य भारतीय समाज के हाशिए पर रहने वाले वर्ग के खिलाफ असुरक्षा, अन्याय, शोषण और सबसे बुरे अत्याचारों को उजागर करना है। यह दलितों के साथ हुई दुविधा, नाटकों, दुर्दशा और अन्याय को व्यक्त करता है। यह सम्मान, न्याय और समानता के लिए निम्न जातियों के जीवन और संघर्षों को चित्रित करता है। यह समुदाय या समूह का साहित्य है। इसलिए, दलित लेखन किसी व्यक्ति की पीड़ा का नहीं बल्कि समूह या समुदाय का है। इस संबंध में दलित साहित्य मुख्यधारा के लेखन से अलग है।

दलित साहित्य की विशेषताएं

दलित साहित्य की पहली अनिवार्य विशेषता यह है कि यह मूल रूप से और अनिवार्य रूप से एक साहित्यिक अभ्यास नहीं है। लेखन के अभ्यास का उद्देश्य साहित्य में एक कला के रूप में सौंदर्य प्रदर्शन को प्राप्त करना नहीं है। यह सामाजिक हस्तक्षेप के उद्देश्यों को पूरा करता है और तदनुसार मजबूत उग्रवादी अर्थ रखता है। यह भारत के अन्य क्षेत्रों की तरह महाराष्ट्र में भी अच्छा है। यह आत्म-अभिकथन और विरोध के आंकड़ों से संबंधित है, और उन लोगों की ओर से अपनी खुद की पहचान की खोज और निर्माण के तरीकों से संबंधित है, जिन्हें पूर्ण मानवीय गरिमा से वंचित किया गया है, और जिनकी चेतना पैटर्न को जबरन आंतरिक बनाने के लिए बनाई गई थी। सांस्कृतिक मूल्यह्रास और सामाजिक सबाल्टर्निटी। दलित साहित्य की मुख्य विशेषताओं में से एक ब्राह्मणवाद का विरोध और अस्वीकृति है, लेकिन ब्राह्मणों का नहीं।

दलित साहित्य का विकास

महात्मा फुले और डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर की वसीयत के कारण महाराष्ट्र में दलित लेखन को गति मिली। महाराष्ट्र में महात्मा फुले और बाबासाहेब अम्बेडकर जैसे सुधारकों की शुरुआत के साथ, उन्होंने अपने कार्यों और लेखन के माध्यम से दलितों के मुद्दों को सामने रखा। दलित लेखक वर्तमान में न केवल दलितों की प्रतिकूल परिस्थितियों को दिखाने में सक्षम हैं, बल्कि जाति से मुक्ति के लिए उनके संघर्ष को भी प्रदर्शित कर रहे हैं। दलित साहित्य इसी विवशता की साहित्यिक अभिव्यक्ति है। हालांकि उस समय के दौरान इसका उपयोग छिटपुट था, लेकिन दलित शब्द ने 1970 के दशक की शुरुआत में, महाराष्ट्र में एक प्रमुख संघ, दलित पैंथर के उदय के साथ, मुद्रा प्राप्त की। दलित पैंथर ने इस शब्द को पुनर्जीवित किया और अनुसूचित जनजातियों, गरीब किसानों, महिलाओं और राजनीतिक, आर्थिक रूप से शोषित सभी लोगों और जाति, धर्म या संस्कृति के नाम को शामिल करने के लिए इसके संदर्भ का विस्तार किया। इसलिए भारत में दलित साहित्य का विकास निम्न रूपों में किया जा सकता है। वे इस प्रकार हैं:

- **दलित कविता:**

www.ignited.in

कवि के जीवन के हिंसक कोशों के अनुभवों को प्रभावी ढंग से व्यक्त करने वाली दलित कविताओं की भरमार है। नारायण सर्वेक्षण प्रारंभिक दलित साहित्य के प्रमुख कवियों में से एक थे। अन्य कवियों जैसे केशवमेश्रम का उत्खनन (खुदाई), दया पवार का कोंडवाड़ा (घुटन भरा बाड़ा), नामदेव ढसाल का गोलपीठा (रेड लाइट ज़ोन), त्र्यंबकपकल का सुरंग (डायनामाइट) और इसी तरह। दलित कविता के विपरीत, लोक कविताओं ने भी दलित संवेदनशीलता को प्रचारित करने के लिए अभ्यास किया। वमनदा कार्डक, भीमराव कार्दक, विट्ठल उमप आदि प्रमुख दलित लोक कवि हैं। लोक कविता में गाथागीत शामिल है जिसने दलित समुदाय के आम लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया। यह दलित सुधार आंदोलनों के बारे में भी जागरूकता पैदा करता है।

- **दलित लघु कथाएँ:**

लघु कथाएँ और उपन्यास साहित्य की महत्वपूर्ण विधा हैं जिनका दलित लेखकों द्वारा दलित संवेदनशीलता को उपयुक्त रूप से व्यक्त करने के लिए शोषण किया जाता है। अन्नाभाऊ साठे की फकीरा, शंकरराव खरात की दावंडी, जेवामी जाट चोरली होती (जब मैंने एक जाति को लूटा - 1963), मारनस्वस्त हॉट आहे (मौत सस्ती होती जा रही है) जैसी लघु कथाएँ बाबूराव बगुल द्वारा, लाल पत्थर एनजी शेंडे द्वारा सबसे अच्छी हैं। दलित लेखकों द्वारा दलित लघु कथाओं के उदाहरण।

- **दलित नाटक:**

नाटक भी दलित संवेदनशीलता की अभिव्यक्ति का सबसे अच्छा स्रोत है। दलित नाटक समान रूप से लोकप्रिय हैं। वे हैं एम. वी. चिटनिस की युगयात्रा, गंगाधर पंतवने की मृत्युशाला और मुखौटा, दत्ता भगत की वात पलवता, बी.सी. शिंदे की उदवस्त (नष्ट), रामनाथ चव्हाण की बामनवाड़ा (ब्राह्मण गली)।

- **दलित आत्मकथा:**

दलित लेखकों ने ज्यादातर सामाजिक अन्याय के अपने स्वयं के अनुभवों की व्याख्या अपनी आत्मकथाओं में की है। इसे दलित आत्मकथा कहा जाता है। साहित्य का यह रूप दलित लेखक के लिए सबसे उपयुक्त है। आजादी के बाद की कई दलित आत्मकथाएँ हैं जैसे-दया पवार की बालूता, पी.वी. सोनकाम्बले की आठवांचे पाक्षी, लक्ष्मण माने की उपरा आदि। इवान दलित महिलाओं ने दलित पुरुष लेखकों की तुलना में अपने अनुभवों को अधिक सूक्ष्मता से प्रस्तुत किया। वे हैं: शांताबाई कांबले की मज्या जलमाची चित्रकथा, उर्मिला पवार की आयदान, बेबी कांबले की जीना अमुचा और आदि। इस प्रकार, दलित सुधार आंदोलन ने उनमें जागरूकता पैदा करने के बाद बड़े पैमाने पर दलित साहित्य का निर्माण किया और यह ज्यादातर स्वतंत्रता के बाद के समय में सामने आया। इसलिए दलित लेखकों की विचारधारा के साथ उनका साहित्यिक आधार है और वे अनेक पत्र-पत्रिकाएं प्रकाशित करते हैं। उनके समर्थन में कई राजनीतिक संगठन भी हैं।

निष्कर्ष

दलित आंदोलन का इतिहास 11वीं शताब्दी का है; ग्यारहवीं शताब्दी के मोची-संत मदारा चेन्नैया प्रथम दलित लेखक थे, जो पश्चिमी चालुक्यों के शासनकाल में रहते थे और जिन्हें वचन कविता का जनक भी माना जाता है। मुख्य मुद्दे जिनके इर्द-गिर्द अधिकांश दलित आंदोलन औपनिवेशिक और उत्तरोत्तर काल में केन्द्रित रहे हैं। औपनिवेशिक काल अस्पृश्यता की समस्या तक ही सीमित है। भारत में भक्ति आंदोलन की विफलता के बाद, समाज सुधारक उभरे और उन्होंने भारत में दलित और अस्पृश्यता के लिए काम करने की कोशिश की। भारत में दलितों की समस्याओं को उजागर करने और समाधान खोजने के लिए आंदोलन शुरू करके और संगठन बनाकर इस दिशा में दूरदर्शी लोगों द्वारा अब तक विभिन्न प्रयास किए गए हैं।

संदर्भ

1. अब्राहम, एम.ए. हाशिए के धर्मों में "गुना परंपरा की विशिष्ट विशेषताएं": एक घटना विज्ञान और अध्ययन की पद्धति की ओर। ज्ञान रॉबिन्सन (एड)। दिल्ली: आईएसपीसीके, 1998. प्रिंट करें।
2. अहमद इम्तियाज और उपाध्याय एस.बी. (एड), समाज, साहित्य और इतिहास में दलित अभिकथन। नई दिल्ली: ओरिएंट ब्लैक स्वान, 2010. प्रिंट करें।
3. अम्बेडकर, बी.आर. राइटिंग्स एंड स्पीचेस। बॉम्बे: शिक्षा विभाग, महाराष्ट्र सरकार, वॉल्यूम। 1, 1996. प्रिंट।
4. बर्मन, जी. सी. इमर्जिंग दलित आइडेंटिटी इन इंडियन लिटरेचर: ए सिलेक्ट स्टडी ऑफ फाइव ऑटोबायोग्राफीज। नॉर्थ-ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी: तुरा, 2014. प्रिंट करें।

www.ignited.in

5. भट्टाचार्य अपराजिता, "अशुद्धता की धारणाएं और प्रारंभिक भारत के समाज में उनके संचालन: मनु के कानूनों पर आधारित कुछ प्रतिबिंब," मानविकी और सामाजिक विज्ञान के आईओएसआर जर्नल (आईओएसआर-जेएचएसएस), वॉल्यूम। 19, अंक 3, वर्. वी (मार्च 2014), पीपी 17-21।
6. कैरी, निउवहोफ: स्थायी प्रभाव: 7 शक्तिशाली वार्तालाप जो आपके चर्च को आगे बढ़ने में मदद कर सकते हैं, 2016। प्रिंट करें।
7. चित्रा। "रिप्रेजेंटेशन ऑफ दलित वॉयस इन लिटरेचर: ए कम्पेरेटिव स्टडी ऑफ शॉर्ट स्टोरीज ऑफ ओमप्रकाश वाल्मीकि एंड एस आर हरनोट।" मई 2018। पंजाब केंद्रीय विश्वविद्यालय, बठिंडा।
8. बीनू, जॉन. राष्ट्र निर्माण में ईसाई योगदान पर एक अध्ययन। चेन्नई: एटीसी प्रकाशन, 2004. प्रिंट करें।
9. दंगल, अर्जुन, एड. जहरीली रोटी। 1992. बॉम्बे: ओरिएंट लॉन्गमैन, 1994. प्रिंट।
10. डेविड, मोसे। बरगद के पेड़ के नीचे संत। लंदन: यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस, 2012। प्रिंट करें।
11. देवी स्मिता, "दलितों के अस्तित्व, दर्द और पीड़ा का मानचित्रण: मुल्क राज आनंद के अछूत, यू.आर. अनंतमूर्ति के संस्कार और ओम प्रकाश वाल्मीकि के जूथन के उपन्यासों का एक अध्ययन," आई जे एफ आई आर आई एम एफ आईएसएसएन - 2455-0620 खंड - 2, अंक - 6, जून - 2016।
12. धर्मतीरधा, एस. हिस्ट्री ऑफ हिंदू इम्पीरियलिज्म इन इंडिया। मद्रास: दलित शैक्षिक साहित्य केंद्र, 1992। प्रिंट।

Corresponding Author

Gargi Prajapati*

Research Scholar, Shri Krishna University, Chhatarpur M.P.